अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 6 फरवरी 2021

जहां अज्ञानता हमारा स्वामी है, वहां वास्तविक शांति की कोई संभावना नहीं है। -दलाई लामा

किसान आंदोलन के समर्थन में कुछ अंतरराष्ट्रीय हस्तियों के ट्वीट और उन पर दिल्ली पुलिस की कार्रवाई को सोशल मीडिया की क्षणिक उत्तेजना से परे समग्रता में समझने और यह देखने की जरूरत है कि इसके पीछे निहित स्वार्थ तो नहीं हैं।

विरोध और साजिश

राजधानी दिल्ली की सीमाओं पर तीन नए कृषि कानूनों के विरोध में चल रहे किसान आंदोलन के समर्थन में कुछ अंतरराष्ट्रीय हस्तियों के ट्वीट और उन पर दिल्ली पुलिस की कार्रवाई को सोशल मीडिया की क्षणिक उत्तेजना से परे समग्रता में समझने की जरूरत है। दो दिन पहले पॉप गायिका रियाना और युवा पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग सहित कुछ अन्य हस्तियों ने किसान आंदोलन के पक्ष में ट्वीट किया था, जिसके पक्ष और विपक्ष में स्वाभाविक रूप से तकरार तेज हो गई। दरअसल किसान संगठनों के आंदोलन के साथ शुरू से यह आशंका जताई जा रही है कि इसकी आड़ में अलगाववादी तत्व खालिस्तानी मुद्दे को गरमाना चाहते हैं। 26 जनवरी को लाल किले में हुई अप्रिय घटना के बाद ऐसी आशंकाओं को और बल मिला है। यहां तक कि खुद पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह कई बार आगाह कर चुके हैं कि कृषि कानूनों और किसान आंदोलन के बारे में जल्द फैसला किया जाना चाहिए, क्योंकि पाकिस्तान इसका फायदा उठा सकता है। अंतरराष्ट्रीय हस्तियों के ट्वीट के बाद दिल्ली पुलिस ने भी अज्ञात लोगों के खिलाफ देशद्रोह और साजिश जैसे आरोप में प्राथमिकी दर्ज की है। हालांकि दिल्ली पुलिस ने ग्रेटा थनबर्ग का नाम नहीं लिया है, लेकिन उसके शक को बल पर्यावरण कार्यकर्ता के ट्वीट से ही मिला है, जिसने अपने पहले ट्वीट के साथ विवादास्पद टूलकिट जारी किया था, जिसमें भारत में कथित तौर पर आंदोलन की रूपरेखा दर्ज थी, जो कि 26 जनवरी की घटना से कथित रूप से मिलती-जुलती थी। ग्रेटा ने बाद में इस टूलकिट को हटाकर दूसरा टूलकिट जारी किया, लेकिन वह किसान आंदोलन के समर्थन के अपने रुख पर कायम हैं। निश्चित रूप से जांच के बाद ही पूरा सच सामने आएगा, लेकिन ऐसी खबरों को हल्के में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि यह भी दावा किया जा रहा है कि कनाडा स्थित खालिस्तान समर्थक गुटों ने किसान

आंदोलन के पक्ष में ट्वीट करने के लिए पॉप गायिका रियाना को कथित रूप से मोटी रकम दी है। लोकतंत्र में सरकार से असहमति या विरोध स्वाभाविक है और देश का इतिहास ऐसे विरोध और असहमतियों से भरा हुआ है। लेकिन इसके साथ ही यह भी देखने की जरूरत है कि निहित स्वार्थ इसकी आड़ में राष्ट्रीय हितों को नुकसान तो नहीं पहुंचा रहे हैं।

महामारी के बीच भारत-अफ्रीका

पहले से ही भारत-अफ्रीका स्वास्थ्य सहयोग बहुआयामी व व्यापक है। कोविड-19 के बीच अफ्रीका में वैक्सीन की पहुंच में प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी, जिसके बाद अफ्रीकी स्वास्थ्य प्रणालियों के व्यापक सुदृढ़ीकरण की योजना जरूरी है।

कोविड-19 महामारी से वैश्विक समुदायों, अर्थव्यवस्थाओं और प्रणालियों को भारी क्षति हुई है, लेकिन भारत पर इसका विशेष रूप से गंभीर प्रभाव पड़ा है। महामारी की प्रकृति और तबाही ने देशों को द्विपक्षीय एवं आत्मनिरीक्षणपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने के लिए बाध्य किया है। वैश्विक व्यवस्था के पारस्परिक संबंधों को देखते हुए यह परखना महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य लाभ के लिए खासकर अफ्रीकी देशों के साथ भागीदारी कैसे की जा सकती है।

वेदा वैद्यनाथन

हालांकि अफ्रीका वायरस की चपेट में आने वाले अंतिम क्षेत्रों में से था, और 35,000 से ज्यादा मौतों के बावजूद एशिया की तुलना में यहां कम मामले दर्ज किए गए, यहां तक कि यूरोप की तुलना में भी वायरस का प्रसार वहां कम हुआ। लेकिन आर्थिक मोर्चे पर यूरोपीय संघ, अमेरिका, चीन और अन्य बाजारों से घटती मांग के चलते आपूर्ति और मांग को झटका लगने के साथ अफ्रीकी देशों के बीच आपसी व्यापार कम होने से यह काफी प्रभावित हुआ।

यह विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है कि उप-सहारा अफ्रीका की प्रति व्यक्ति जीडीपी इस साल -5.4 प्रतिशत कम हो सकती है, जो 4.9 करोड़ अफ्रीकियों को गरीबी में धकेलने के साथ पिछले एक दशक की प्रगति को पीछे ले जा सकती है। इसके अलावा पूरे अफ्रीका से तीन करोड़ नौकरियां जा सकती हैं, जबकि नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका और अंगोला जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की वास्तविक जीडीपी के 2023-24 से पहले पटरी पर लौटने की संभावना नहीं है। महामारी ने इस क्षेत्र में सामाजिक कल्याण योजनाओं और स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति को भी उजागर किया है, कई देशों में तो दस लाख मरीजों पर मात्र एक अस्पताल, एक डॉक्टर और दस हजार मरीजों पर एक बेड मौजूद है।

इसके बावजूद अफ्रीकी नेताओं, अफ्रीकी संघ और अफ्रीका के रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के बीच सहयोग ने परीक्षण क्षमता में वृद्धि की, संसाधन जुटाए और वायरस का प्रसार रोकने के लिए उपाय किए। हालांकि अफ्रीकी एजेंसियों के पास सामूहिक रूप से संकट से निपटने का केंद्र है, लेकिन अन्य बहुपक्षीय एजेंसियों, संस्थानों एवं खिलाड़ियों ने उनके प्रयासों को मजबूती दी। यहीं पर भारत-अफ्रीकी संबंधों ने हाल के दिनों में गति पकड़ी। नियमित उच्च स्तरीय यात्रा, बढ़ते राजनयिक संबंध, विभिन्न क्षेत्रों में विविध जुड़ाव और जीवंत प्रवासी के कारण द्विपक्षीय संबंध इस अभूतपूर्व संकट के दौरान आकर्षण पैदा कर सकते हैं।

सहयोग की प्राथमिकता का क्षेत्र कोविड-19 राहत और न्यायसंगत वैक्सीन पहुंच में प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करना है, जिसके बाद अफ्रीकी स्वास्थ्य प्रणालियों के व्यापक सुदृढ़ीकरण की योजना होगी। पहले से ही भारत-अफ्रीका स्वास्थ्य सहयोग बहुआयामी व व्यापक है, और इसमें राष्ट्रीय, राज्य और उपनगरीय खिलाड़ी शामिल हैं, जो अफ्रीकी संस्थागत और व्यक्तिगत क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं। इसमें कम लागत वाली जेनरिक दवाओं का निर्यात करना, स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे का निर्माण, सहायता प्रदान करना, तकनीकी सहायता और चिकित्सा पर्यटकों की मेजबानी आदि शामिल है।

दुनिया की फार्मेसी के रूप में मशहूर भारत पहले ही हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन एवं अन्य दवाएं 25 से ज्यादा अफ्रीकी देशों को भेज चुका है, यह इस क्षेत्र में कम लागत वाली कोविड-19 टीकों की आपूर्ति में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। दवाओं की आपूर्ति करने के अलावा भारतीय दवा कंपनियां अफ्रीकी दवा निर्माण क्षमता बढ़ाने में भी भूमिका निभा सकती हैं। इस क्षेत्र के अधिकांश देश बड़े पैमाने पर भारतीय दवा निर्यात पर निर्भर हैं, केन्या और इथियोपिया जैसे देशों में कई भारतीय कंपनियों को निवेश के माहौल ने आकर्षित किया है और उन्होंने स्थानीय कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम स्थापित किए हैं। पहले से ही इस क्षेत्र में सक्रिय उद्योगों के पास यह अवसर है, जिन्हें पता है कि जटिल पेटेंट कानूनों से कैसे निपटना है, जिनसे उन संगठनों के साथ साझेदारी स्थापित करने में मदद मिलती है।

वैकल्पिक रूप से भारतीय उद्योगों को इस क्षेत्र में विदेशी निवेशकों को दिए जाने वाले प्रोत्साहन और स्थानीय व्यवसायों के साथ साझेदारी के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन दिए जाने से भी लाभ होगा। दवा निर्माण से अलग कच्चे माल के प्रसंस्करण, पैकेजिंग और आपूर्ति परिवहन जैसे संबद्ध उद्योगों में भी जबर्दस्त अवसर हैं, जिनका भारतीय उद्यमी लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में काम करने वाले निजी खिलाड़ियों की पहले ही अफ्रीका में महत्वपूर्ण उपस्थिति है। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में पारिस्थितिकी निर्माण, निवेश बढ़ाने और क्रॉस-कंट्री पार्टनरशिप के उद्देश्य से हेल्थ फेडरेशन ऑफ इंडिया और अफ्रीका हेल्थ फेडरेशन के बीच हाल ही में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जो स्वास्थ्य में एक मजबूत साझेदारी की व्यापार क्षमता को मान्यता देता है।

इस क्षेत्र में भारत-अफ्रीका सहयोग को व्यापक बनाने के लिए भारत सरकार सूत्रधार की भूमिका निभा सकती है और वह चिकित्सा पेशेवरों के साथ काम करने वालों का समूह बना सकती है, जो टीके की आपूर्ति से परे महामारी के अनुभव और सीख को साझा करने के लिए अफ्रीकी देशों के समकक्षों के साथ वीडियो या टेली कांफ्रेंस की मेजबानी कर सकती है। ई-आरोग्य भारती परियोजना इस दिशा में एक कदम है।

स्वास्थ्य सहयोग छोटे, मध्यम और दीर्घकालिक रूप से महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि दोनों क्षेत्र महामारी के बाद के प्रभाव से उबर रहे हैं।

भारतीय खिलाड़ी विश्व स्वास्थ्य संगठन या संयुक्त राष्ट्र जैसे हितधारकों द्वारा अफ्रीका के आरोग्य लाभ के लिए किए जा रहे प्रयासों को आगे बढ़ाने की पहल कर सकते हैं। हालांकि यह तर्क दिया जा सकता है कि कोविड-19 संकट का भारत पर गंभीर प्रभाव पड़ा है और इससे निपटने की घरेलू जिम्मेदारी भी देश के पास है। ऐसे में अफ्रीका के साथ साझेदारी करना भारत-अफ्रीका एकजुटता की समृद्ध ऐतिहासिकता के लिए बड़ी बात होगी।

-लेखिका शोधकर्ता हैं और नई दिल्ली के इंस्टीट्यूट ऑफ चाइनीज स्टडीज में एशिया-अफ्रीका संबंधों की विशेषज्ञ हैं।

सत्य नारायण गोयनका
1924-2013

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

एक धर्म से दूसरे में नहीं, बल्कि रूपांतरण दुख से सुख की ओर होना चाहिए। यह बंधन से मुक्ति की ओर होना चाहिए। क्रूरता से करुणा की तरफ होना चाहिए।

व्यक्तिगत शांति से ही मानव समाज में शांति

धर्म तभी धर्म है, जब वह हमें जोड़ता है, जब वह हमें बांटता है, तो वह कुछ नहीं है। मैं रूपांतरण के पक्ष में हूं, लेकिन एक धर्म से दूसरे धर्म में रूपांतरण के पक्ष में नहीं। रूपांतरण दुख से सुख की ओर होना चाहिए। यह बंधन से मुक्ति की ओर होना चाहिए, क्रूरता से करुणा की तरफ होना चाहिए। आज इसी तरह के रूपांतरण की जरूरत है। भारत की प्राचीन भूमि ने दुनिया को, मानवता को शांति और सद्भाव का संदेश दिया। यही नहीं, इसने शांति और सद्भाव हासिल करने के लिए एक विधि भी बताई। मुझे ऐसा लगता है कि अगर हम मानव समाज में शांति चाहते हैं, तो व्यक्तिगत शांति की अनदेखी नहीं कर सकते हैं। यदि व्यक्ति के मन में शांति नहीं है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि दुनिया में वास्तविक शांति कैसे हो सकती है। अगर मेरा मन उत्तेजित है, जो हमेशा क्रोध, घृणा, बुरी इच्छाओं और दुश्मनी के भाव से भरा रहता है, तो मैं दुनिया को शांति कैसे दे सकता हूं? इसलिए प्रबुद्ध व्यक्तियों ने कहा है कि पहले अपने भीतर शांति प्राप्त करो। सबको अपने भीतर यह पड़ताल करनी चाहिए कि क्या उसके भीतर वास्तविक शांति है। दुनिया के सभी ऋषियों, संतों और द्रष्टाओं ने सलाह दी है कि स्वयं को जानो। इसका मतलब है, न केवल बौद्धिक स्तर पर जानना, या भावनात्मक या भक्ति के स्तर पर स्वीकार करना, बल्कि वास्तविक स्तर पर अनुभव द्वारा एहसास करना। जब आप अपने बारे में, अपने भीतर, अनुभव के स्तर पर सत्य का अनुभव करते हैं, तो जीवन की समस्याओं का समाधान मिल जाता है।

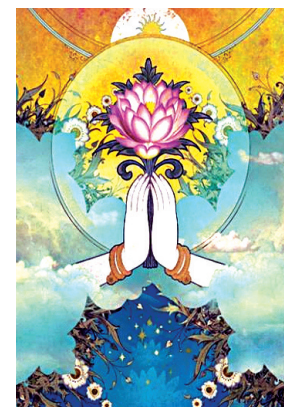

प्रकृति का नियम इतना स्पष्ट होता है कि जब भी कोई मन में नकारात्मकता पैदा करता है, तो वह पीड़ित होने लगता है; और जब भी कोई नकारात्मकता से मुक्त होता है, तो वह शांति और सद्भाव का आनंद लेता है।

आप सार्वभौमिक नियम, प्रकृति के नियम को जानने से शुरुआत कर सकते हैं, अथवा यदि चाहें, तो सर्वशक्तिमान ईश्वर के नियम से शुरुआत कर सकते हैं। यह नियम सब पर लागू होता है- जब मैं क्रोध, घृणा, बुरी इच्छाओं और दुश्मनी को जन्म देता हूं, तो उसका पहला शिकार मैं ही होता हूं। पहले मैं खुद को नुकसान पहुंचाता हूं, उसके बाद ही दूसरों को नुकसान पहुंचाना शुरू करता हूं। यही प्रकृति का नियम है। जब मेरा मस्तिष्क नकारात्मकता से मुक्त होता है, तो उसके बाद यह नियम फिर से अपना काम करना शुरू करता है। जिस क्षण मन में कोई नकारात्मकता नहीं रहती है, तो प्रकृति या सर्वशक्तिमान ईश्वर मुझे पुरस्कृत करने लगता है और मैं शांति महसूस करता हूं। यह भी मैं अपने भीतर महसूस कर सकता हूं। कोई भी धर्म, परंपरा या देश जब प्रकृति के नियम को भंग करता है, और मन में नकारात्मकता को जन्म देता है, तो उसे पीड़ा होती है। प्रकृति ही दंड देती है। जो लोग प्रकृति के नियम को तोड़ते हैं, वे नरक का दुख महसूस करने लगते हैं। जो बीज वे बोते हैं, वह नारकीय दुख का बीज होता है। इसी तरह अगर मैं अपने मन को शुद्ध रखता हूं, प्रेम और करुणा से भरा रखता हूं, तो मैं स्वर्ग के साम्राज्य का आनंद उठा सकता हूं।

अशुद्ध मन का शुद्ध मन में रूपांतरण आवश्यक है। यह रूपांतरण लोगों को अद्भुत तरीके से बदलता है। यह कोई जादू या चमत्कार नहीं है; यह मन और पदार्थ की अंतःक्रिया को देखने का एक शुद्ध विज्ञान है। धैर्यपूर्वक अवलोकन करें, तो प्रकृति का नियम इतना स्पष्ट होता है कि जब भी कोई मन में नकारात्मकता पैदा करता है, तो वह पीड़ित होने लगता है; और जब भी कोई नकारात्मकता से मुक्त होता है, तो वह शांति और सद्भाव का आनंद लेता है। आत्म-निरीक्षण की इस विधि का अभ्यास सभी कर सकते हैं।

डॉ. नूरी प्रवीन

मंजिलें और भी हैं

एमबीबीएस की पढ़ाई के दौरान ही मैंने अनाथों व वृद्धों के लिए काम करना शुरू किया। यहां लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। इसलिए मैंने यहां पर अपनी क्लिनिक खोली, ताकि उन्हें बेहतर इलाज दे सकूं।

दस रुपये फीस लेकर दे रही हूं बेहतर इलाज

मैं आंध्र प्रदेश में कडपा की रहने वाली पेशेवर डॉक्टर हूं। मेरी परिवरिश एक ऐसे परिवार में हुई, जो कि खुले विचारों का स्वागत करते थे और शिक्षा को लेकर सजग रहते थे। मेरे पिता और दादाजी जरूरतमंदों की मदद और सेवा के लिए हमेशा आगे रहते थे। उनका प्रभाव मेरे ऊपर भी था, जिसके चलते मैं स्कूल समय से ही सामाजिक कार्यों में सहयोग करने के लिए सक्रिय रहने लगी। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने एमबीबीएस में प्रवेश लिया और पढ़ाई करने लगी। कॉलेज में मुझे अपने जैसे कई दोस्त मिले। हमने मिलकर एक संगठन शुरू किया, जिसका उद्देश्य सामाजिक कार्य करना था। हमने बच्चों के बीच किताबें बांटने और वृद्धों की मदद के लिए वृद्धाश्रम व अनाथालयों में जाना शुरू किया। एमबीबीएस के दौरान ही मैंने एक कॉरपोरेट अस्पताल में प्रशिक्षण लिया। लेकिन मरीजों के साथ होने वाले बर्ताव के बाद मैंने फैसला किया कि पढ़ाई खत्म होने के बाद खुद की क्लिनिक खोलूंगी, जहां लोगों को कम रुपयों में बेहतर इलाज दे सकूं, और मैंने वही किया।

(विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

सर्वोत्तम चिकित्सा सेवा

समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को सर्वोत्तम चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए मैंने इसकी शुरुआत वर्ष 2010 में की। मैंने परामर्श शुल्क दस रुपये, जबकि बिस्तर शुल्क पचास रुपये प्रतिदिन रखा। आश्चर्यजनक रूप से दिन भर क्लिनिक पर मरीजों की भीड़ लगी रहती है। क्लिनिक में एक ऑपरेशन थियेटर है। इसमें एक लैब, तीन रोगी बेड और एक फार्मेसी भी है।

आशीर्वाद दिया

मैंने अपना क्लिनिक जानबूझकर कडपा के ऐसे इलाके में खोला है, जहां आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की संख्या अत्यधिक है। और वे महंगे इलाज का खर्च नहीं उठा सकते। मैंने अपने माता-पिता को बताए बगैर क्लिनिक शुरू की। लेकिन जब उन्हें मेरे उद्देश्य और नाममात्र की फीस वसूलने के मेरे फैसले के बारे में पता चला, तो वे बेहद खुश हुए और मुझे आशीर्वाद दिया।

मिलता है प्रोत्साहन

एक न्यूरो बीमारी से जूझ रहे बच्चे का मैंने इलाज किया, जो अपने पैरों से चल नहीं पा रहा था। एक महीने के बाद, वह अपने दोनों पैरों पर चलते हुए लौटा। ऐसे कई लोग आकर मुझे प्रोत्साहित करते हैं। यहां के ज्यादातर मरीज कुपोषण और कमजोरी से पीड़ित हैं। मैं एक अस्पताल बनाने का प्रयास कर रही हूं, जहां लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा मिल सके।

आंकड़े

राजकोषीय घाटा

देश के सरकारी खजाने का राजकोषीय घाटा लगातार बढ़ रहा है। हालांकि वित्त वर्ष 2022 में इसके कम होने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। बावजूद वित्त वर्ष 2021 में यह 9.5 फीसदी है।

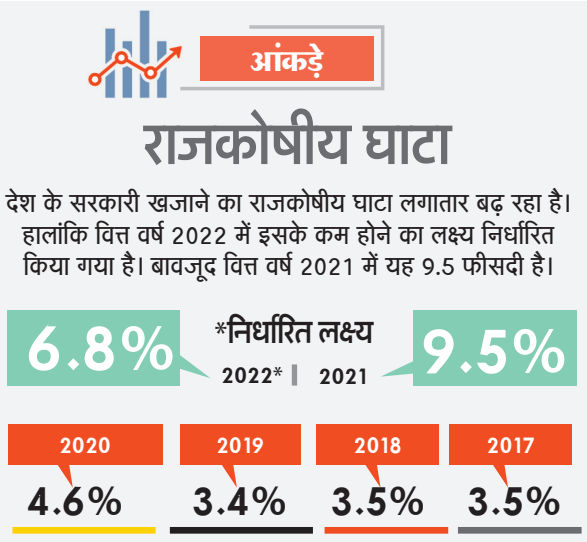

स्रोत : बजट दस्तावेज

महावीर ने कहा, जो कटु वचन न बोले, क्रोध न करे, संयम का पालन करे और संकट आने पर व्याकुल न हो- वही भिक्षु है।

सच्चा भिक्षु कौन

अंतर्यात्रा
शिवकुमार गोयल

तीर्थंकर महावीर सत्संग के लिए आने वालों से कहा करते थे, मोह में अंधा होकर आदमी बुरा-से-बुरा पाप करने से भी नहीं हिचकता, पर जब उसका परिणाम भोगने का समय आता है, तब वह अकेला ही दुख भोगता है। अतः मोह, ममता और लोभ का त्याग कर किसी भी क्षण कोई गलत काम न होने पाए- इसका प्रयास करना चाहिए। साधकों को संबोधित करते हुए महावीर ने कहा, साधक को सदाचार का पूर्ण पालन करना चाहिए। जो निष्कपट तथा सरल होता है, उसी की आत्मा शुद्ध होती है और जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, उसी के पास धर्म ठहर सकता है। सदाचारी, सात्विक और निष्कपट व्यक्ति ही साधना की अंतिम स्थिति पूर्ण निर्वाण को प्राप्त होता है। एक व्यक्ति ने तीर्थंकर से पूछा, दुख क्यों सताते हैं? भगवान ने उत्तर दिया, प्राणी अपने-अपने दुष्ट कर्मों के कारण ही दुखी होता है। कर्म का फल भोगे बिना किसी को छुटकारा नहीं मिल सकता है। भिक्षु के लक्षण पूछे जाने पर उन्होंने कहा, जो कटु वचन नहीं कहता, क्रोध नहीं करता, जिसकी इंद्रियां अचंचल हैं, जो संयम का पालन करता है और संकट आने पर व्याकुल नहीं होता- वही भिक्षु है। भिक्षु वेश से नहीं, सद्गुणों से होता है। जो सब प्रकार का त्याग करता है, वही सच्चा संन्यासी कहलाता है। -अमर उजाला आर्काइव से।

शिलालेख

तब कौन मौन हो रहता है?
जब पानी सर से बहता है।
चुप रहना नहीं सुहाता है,
कुछ कहना ही पड़ जाता है।
व्यंग्यों के चुभते बाणों को
कब तक कोई भी सहता है?
जब पानी सर से बहता है।

- आरसी प्रसाद सिंह

चौतरफा घिरते इमरान

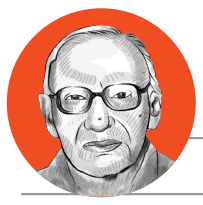

हाल में ईरान ने पाकिस्तान में कुछ आतंकियों को मारते हुए जिस तरह अपने सैनिकों को छुड़ाया, उससे भारत का दावा फिर सच हुआ।

कुलदीप तलवार

पाकिस्तान

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान को विपक्ष और जनता के जबर्दस्त विरोध का सामना तो करना ही पड़ रहा है, हाल ही में ईरान के रेवोल्यूशनरी गार्ड्स ने पाकिस्तान के बलूचिस्तान में घुसकर आतंकवादियों को मारकर अपने दो सैनिकों को जिस तरह मुक्त कराया, उससे दुनिया भर में पाकिस्तान की भारी किरकिरी हो रही है। ईरान द्वारा चलाए गए इस ऑपरेशन में कई पाकिस्तानी सैनिक भी मारे गए हैं, जो आतंकवादियों को सुरक्षा प्रदान कर रहे थे। ईरान द्वारा चलाए गए इस ऑपरेशन से भारत का दावा एक बार फिर सच साबित हुआ है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को पनाह देता है। यह उस देश का हाल है, जिसके पास कोरोना वैक्सीन लेने के लिए भी रकम नहीं है। कहीं से कर्ज नहीं मिल रहा। सऊदी अरब जैसे पुराने मित्र ने भी पहले दिया हुआ कर्ज वापस लेने के लिए

अल्टीमेटम दे दिया है। चीन ने भी नया कर्ज देने के लिए गारंटी मांगी है। मलयेशिया जैसे दोस्त देश ने भी कर्ज वापस न देने के कारण पाकिस्तान के दो हवाई जहाज जब्त कर लिए हैं। हालात इतने बदतर हो गए हैं कि सरकार ने 759 एकड़ में फैले इस्लामाबाद के सबसे बड़े पार्क को गिरवी रख दिया है। प्रधानमंत्री इमरान खान इस्राइल से हाथ मिलाने की फिराक में हैं, जिसका विरोध हो रहा है। सिंध और बलूचिस्तान प्रांतों के अवाम ने पाकिस्तान से अलग होने की मांग करते हुए सरकार-विरोधी प्रदर्शन बढ़ा दिए हैं।

सिंधी राष्ट्रवादियों ने हाल ही में सिंधु देश की आजादी की मांग को लेकर एक विशाल रैली निकाली है। प्रदर्शनकारियों ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व विश्व के अन्य नेताओं की फोटो हाथ में लेकर सरकार-विरोधी नारे लगाए और सिंध देश को आजादी दिलाने के लिए भारत से दखल देने की प्रार्थना की। प्रदर्शनकारियों का दावा है कि सिंधु घाटी सभ्यता वैदिक धर्म का घर है। ब्रिटिश साम्राज्य ने इस पर जबरन कब्जा कर लिया था और बंटवारे के समय इसे इस्लामी हाथों में सौंप दिया था। सिंध देश को आजादी दिलाने की मांग पुरानी है। पिछले कुछ दशकों से पाक सुरक्षा एजेंसियां राष्ट्रवादी नेताओं, कार्यकर्ताओं और छात्रों को प्रताड़ित कर रही हैं। जेई सिंध मुत्ताहिदा के अध्यक्ष गुलाम मुर्तजा के 117 वें जन्मदिन पर इस संस्था के नेता शफी अहमद बरफल ने कहा है कि सिंध की संस्कृति और परंपरा पाकिस्तान से अलग है। लेकिन सिंध राष्ट्रवाद पर पंजाबी राष्ट्रवाद हावी है। सिंध में 70 फीसदी आबादी मुहाजिरों की है। लेकिन उन्हें बराबरी का दर्जा नहीं मिला। पाकिस्तान सिंध के द्वीपों पर बंदरगाहों और सामरिक क्षेत्रों को चीन के हवाले करता जा रहा है। सिंधी राष्ट्रवादियों का कहना है कि बांग्लादेश की तरह सिंध भी आजाद होकर रहेगा।

एक और प्रांत बलूचिस्तान में तो बंटवारे के समय से ही पाकिस्तान से अलग होने की मांग की जा रही है। राष्ट्रवादी बलूचियों का कहना है कि वे कभी पाकिस्तान में शामिल होना नहीं चाहते थे। इसलिए बलूचिस्तान पर पाकिस्तान का नाजायज कब्जा है। हाल ही में वहां अल्पसंख्यक हजारा समुदाय के 11 मजदूरों की सामूहिक हत्या कर दी गई। हाल ही में विश्व स्तर पर बलूच आबादी के अधिकारों की मांग उठाने वाली करीमा बलूच की टोरंटों में संदिग्ध हालत में लाश पाई गई। इसके पीछे भी आईएसआई का हाथ बताया जा रहा है। वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर केंद्र सरकार का अधिकार बना हुआ है और चीन इस क्षेत्र को अपनी कॉलोनी बनाता जा रहा है। पिछले एक दशक में बलूचिस्तान में 18,000 से ज्यादा बलोच युवकों की पाक सेना हत्या कर चुकी है।

दुनिया जानती है कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत के जम्मू-कश्मीर का हिस्सा है, जिस पर पाक ने जबर्दस्ती कब्जा कर रखा है। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 व 35ए खत्म करने के बाद वहां के लोग भारत के साथ रहने के लिए बेचैन हैं। पाक सरकार इस क्षेत्र को चीन को सौंप रही है और चीनी लोगों को वहां बसा रही है। पिछले दिनों वहां चीनी सेना द्वारा 33 किलोमीटर लंबी सड़क बनाए जाने का भारी विरोध हुआ। गिलगित-बाल्टिस्तान में भी सरकार-विरोधी प्रदर्शन जारी है।